अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

बुजुर्ग पीढ़ी और बदलते सामाजिक प्रतिमान : एक समाजशास्त्रीय विमर्श

डॉ. ज्योति सिडाना, सहायक आचार्य समाजशास्त्र विभाग,

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा (राजस्थान) कतरलवजपेपकंदं@हउंपसण्बवउ

सारांशः

सामान्यतः सीनियर सिटीजन की अवधारणा को तीन आयामों से समझा जा सकता है—पहला जैवकीय है अर्थात् उसकी आयु के आधार पर, दूसरा मनोवैज्ञानिक है अर्थात् उनके व्यक्तित्व में शामिल स्थिरता के आधार पर और तीसरा सामाजिक—सांस्कृतिक आयाम अर्थात् उनके अनुभवों के आधार पर। ये तीनों पक्ष सीनियर सिटीजन के व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा होते हैं। इसलिए ये समूह इतनी आयु के बाद भी समाज के लिए एक उत्पादक इकाई बने रहते हैं। ये अपने अनुभवों को समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से नई पीढ़ी को इस आशा के साथ हस्तांतरित करते हैं कि अगर नई पीढ़ी उनके अनुभवों को अपने जीवन में प्रयुक्त करती चली जाएगी तो उनके जीवन के जोखिम या खतरे कम होते जायेंगे। इसी कारण से इन्हें परिवार का मुखिया माना जाता है और परिवार में इनकी प्रतिष्ठा भी उच्च होती है। परन्तु अब टेक्नोलॉजी, संस्कृति, गतिशीलता में परिवर्तन के कारण परिवार की संरचना तेजी से बदल रही है जिसके कारण वरिष्ठ नागरिक अलगाव, अकेलेपन और पृथक्करण का शिकार हो रहे हैं। परिवार के कई सदस्य स्थानिक गतिशीलता के कारण घर से अलग दूसरी जगह जाकर रहने लगते हैं परिणामस्वरुप संयुक्त परिवार में जो भूमिका ये पीढ़ी निभा रही थी वे अब बाजार की संस्थाएं निभा रही हैं जैसे क्रच, नैंसी, पालना घर इत्यादि। यानी परिवार में अब बच्चों के समाजीकरण का काम अब बाजार या टेक्नोलॉजी करने लगी है संभवतः यही कारण है कि बच्चों में परिवार के प्रति भावनात्मक लगाव और सदस्यों के प्रति दायित्व की भावना ही नहीं पनपती। इसलिए स्थानों में आई दूरी कई बार इन संबंधों को मजबूती देती है और कई बार इन सबंधों को कमजोर करती है।

मुख्य शब्दः

बुजुर्ग पीढ़ी, हेल्पएज इंडिया, उपभोक्तावादी समाज, डिमेंशिया, पीढ़ी अन्तराल।

इस यथार्थ से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रत्येक परिवार की नीव होती है परिवार की बुजुर्ग पीढ़ी. विशेष रूप से भारतीय समाज में तो यह माना जाता रहा है कि जिस घर में बड़े—बुजुर्गों का आशीर्वाद होता है वहां हमेशा समृद्धि का वास होता है। पर क्या आज भी लोग ऐसा ही सोचते या मानते हैं, संभवतः नहीं अधिकांश लोग ऐसा नहीं सोचते। अगर सोचते तो हेल्पएज इंडिया संस्था द्वारा बुजुर्गों पर किये गए सर्वे में इस तरह के परिणाम सामने नहीं आते। हेल्पएज इंडिया द्वारा किए गए एक सर्वे के अनुसार 82 फीसदी बुजुर्ग अपने परिवार में रहते हैं लेकिन उनमें से अधिकांश बुजुर्ग अपने बेटों और बहुओं से खुद को पीड़ित महसूस करते हैं। घर वालों के अमानवीय व्यवहार या दुर्व्यवहार के कारण तीन चौथाई से ज्यादा बुजुर्ग परिवार में रहने के बावजूद भी अकेलेपन का शिकार हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

सर्वे के मुताबिक देश में 59 फीसदी बुजर्गों को लगता है कि समाज में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। हालांकि केवल 10 फीसदी ने ही इस बात को स्वीकार किया कि वे भी दुर्व्यवहार के शिकार हैं। संभवतः अपने प्रति होने वाले दुर्व्यवहार को स्वीकार न करना या किसी से साझा न करने का कारण परिवार का सोशल स्टेटस होता है कि लोग उनके परिवार, उनकी परवरिश के बारे में क्या सोचेंगे। इसलिए अधिकांश बुजुर्गों ने स्वीकार नहीं किया कि वे परिवार में किस तरह के अकेलेपन या उपेक्षा के शिकार हैं। सर्वे में यह भी सामने आया कि इनमें से 36 फीसदी बुजुर्ग अपने रिश्तेदारों, 35 फीसदी बेटे और 21 फीसदी बहू से परेशान हैं। वहीं 57 फीसदी अनादर, 38 फीसदी मौखिक दुर्व्यवहार, 33 फीसदी उपेक्षा, 24 फीसदी आर्थिक शोषण और 13 फीसदी बुजुर्गों ने शारीरिक शोषण को झेला है।

इन सभी आंकड़ों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि इन घटनाओं के लिए बहुत हद तक परिवारों की संस्कृति ही जिम्मेदार है। प्रारम्भ से ही भारत में माता–पिता अपनी सारी जमा पूंजी अपने बच्चों के पालन–पोषण और कैरियर बनाने में लगा देते हैं इस उम्मीद के साथ कि उनके बुढ़ापे में वे उनका सहारा बनेगे। इसलिए वे अपने भविष्य की चिंता किये बिना उनकी शिक्षा पर और उनका अच्छा भविष्य बनाने पर सब कुछ खर्च कर देते हैं। लेकिन जब बच्चे कमाने लगते हैं तो वे अपने माता–पिता को छोड़कर अपने देश, राज्य या शहर से बाहर जाकर अपनी नयी दुनिया बसा लेते हैं। क्योंकि आज की पीढ़ी के लिए परिवार का मतलब पति–पत्नी और उसके बच्चे हैं। उन्हें अपने माता–पिता या भाई–बहनों से कोई सरोकार नहीं होता। या फिर मासिक खर्चा भेजकर अपने कर्तव्य को पूरा हुआ मान लेते हैं। आज के डिजिटल युग में भावनाओं का महत्त्व समाप्त हो चुका है। उन्हें अपने माता–पिता से केवल धन और संपत्ति चाहिए होती है उनकी जिम्मेदारी लेने के लिए वे तैयार नहीं होते। क्योंकि उनका मानना है कि माता–पिता ने उनके लिए जो भी किया है वो उनका फर्ज था कोई अहसान नहीं किया। ऐसी सोच वाली पीढ़ी से देखभाल की उम्मीद रखना रेगिस्तान में पानी ढूँढने जैसा है।

ऐसा नहीं कि लोग इन बातों से परिचित नहीं हैं। इसके बावजूद भी समाज की इस गंभीर समस्या के प्रति लोगो में जागरूकता फैलाने के लिए समय–समय पर कई फिल्में और धारावाहिक बने। फिल्म 'बागबान' सभी को याद होगी किस तरह इस फिल्म में बच्चे अपने माता–पिता को कुछ–कुछ समय के लिए बारी–बारी से अपने पास रखने को तैयार होते हैं ताकि किसी एक बच्चे पर उनका भार न पड़े और उनके साथ न केवल दुर्व्यवहार करते हैं बल्कि उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को फिजूलखर्ची समझ कर उनकी उपेक्षा करते हैं। इसी तरह आजकल टेलीविजन पर 'स्वरण घर' नामक एक धारावाहिक दिखाया जा रहा है उसमे भी तीन–तीन बेटे होते हुए भी पिता की बीमारी का खर्चा उठाने से वे मना कर देते हैं। और विदेश में अपने–अपने परिवार के साथ ऐश के साथ रहते हैं। पिता के मरने पर उनकी संपत्ति में से हिस्सा लेने के लिए भारत लौट आते हैं और माँ के विरुद्ध मुकदमा दायर कर देते हैं। कहते भी है न कि मीडिया समाज का आइना होता है सच ही तो है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

लेकिन विरोधाभास तो देखिये यही पीढ़ी जब इन धारावाहिकों या फिल्मों को देखती है तो उनकी आंखे नम हो जाती हैं और सिनेमाहाल से बाहर आकर वे भी वैसा ही व्यवहार अपनी बुजुर्ग पीढ़ी के साथ करने में कोई कसर नहीं छोड़ती। सोशल मीडिया पर यानी फेसबुक, व्हाट्सएप पर अपने स्टेटस में ऐसे–ऐसे मैसेज या स्लोगन लगाते हैं जिनसे पता चलता है कि वे रिश्तों की कितनी कदर करते हैं, उनके माता–पिता, परिवारी–जन उनके लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। लेकिन वास्तव में उनके पास अपनी बुजुर्ग पीढ़ी के लिए समय ही नहीं होता तो भावनाए कहाँ से आएँगी। यह उम्र का ऐसा पड़ाव होता है जहाँ इंसान का मन और शरीर दोनों शिथिल होने लगते हैं। ऐसे में उन्हें अपने बच्चों के सहारे की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है विशेष रूप से भावनात्मक सहारे की जरुरत होती है। ऐसे में बुजुर्गों में तनाव, निराशा, और अकेलापन जैसे लक्षण उभरना सामान्य बात है। अनेक शोधों में यह सामने आया कि अकेलेपन के कारण बुजुर्गों में डिमेंशिया (दिमाग की क्षमता का निरंतर कम होना) की समस्या उत्पन्न हो जाती है। चिकित्सकों के अनुसार डिमेंशिया का मरीज शारीरिक रूप से नहीं बल्कि मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है। यहां तक कि दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए भी उसे दूसरों की मदद लेनी पड़ती है। यह त्रासदी ही तो है कि ऐसे में उन्हें जब परिवार की और अपने बच्चों की सबसे ज्यादा जरुरत होती है तब वे उनके पास नहीं होते। अनेक घटनाएँ सुनने और देखने में आती हैं कि बंद घर/फ्लैट में बुजुर्ग व्यक्ति या दंपति मृत मिले अथवा घरेलु नौकर ने लूट की नियत से उनकी हत्या कर दी आदि आदि।

आज के उपभोक्तावादी समाज में संबंध, भावनाएं, प्रतिबद्धता और त्याग जैसे भाव अब अर्थहीन हो चुके है। इनके स्थान पर भौतिकतावादी वस्तुएं जैसे गजेट्स, ब्रांडेड सामान, सोशल मीडिया पर अपने उच्च स्टेटस का दिखावा युवा पीढ़ी पर इतना हावी हो गया है कि परिवार के बुजुर्ग सदस्य और उनकी समस्याएँ उन्हें दिखाई ही नहीं देती। माता–पिता की संपत्ति तो सभी बच्चों को चाहिए पर उन्हें अपने साथ रखने, उनकी देखभाल करने से उनकी आजादी में व्यवधान पड़ता है। माता–पिता अगर बच्चों को फिजूलखर्ची के लिए टोके या अनुशासन सिखाएं तो उन्हें लगता है कि वे सठिया गए हैं, रुढ़िवादी हैं अपनी जिन्दगी तो जी ली हमारी खराब कर रहे हैं। यही सोच इस नयी पीढ़ी को अपने बुजुर्गों से दूर कर रही है।

आज के डिजिटल समाज में अधिकांश काम ऑनलाइन होने लगे हैं लेकिन यह भी सच है कि आज भी अधिकांश बुजुर्ग डिजिटल तकनीक या विभिन्न ऑनलाइन सुविधाओं का उपभोग आसानी से नहीं कर पाते हैं। सर्वे के अनुसार 71 फीसदी बुजुर्गों के पास स्मार्टफोन नहीं है और जो लोग स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं वे भी इसके लाभों से पूरी तरह परिचित नहीं हैं। और वे इसका उपयोग मुख्य रूप से कॉलिंग (49 प्रतिशत), सोशल मीडिया (30 प्रतिशत) और बैंकिंग लेनदेन (17 प्रतिशत) के लिए करते है। वे जब भी अपने बच्चों से स्मार्टफोन के इस्तेमाल को सिखाने के लिए कहते हैं तो वे यह कहकर टाल

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

जाते हैं कि आप तो रहने दो आपको नहीं आएगा। बच्चे भूल जाते हैं कि जब बचपन में उन्हें एक ही चीज कई बार सिखाने पर भी नहीं आती थी तो यही माता–पिता उन्हें वही चीज बार–बार हंसकर सिखाते थे। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि समाज में पीढ़ी अन्तराल (हमदमतंजपवद हंच) तो सदियों से चला आ रहा है, दो पीढ़ियों की सोच और व्यवहार में अंतर सामान्य सी बात है। लेकिन एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हाशिए पर खड़ा कर देना, उन्हें अर्थहीन मानना या खुद पर बोझ मानना समज के समक्ष अनेक तरह के जोखिम उत्पन्न कर रहा है। अध्ययन के दौरान 40 फीसदी बुजुर्गों ने यह भी स्वीकार किया कि वे स्वयं को आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस नहीं करते। परम्परागत परिवारों में माता–पिता हमेशा से ही अपनी सारी बचत और जमा पूंजी अपने बच्चों पर खर्च करते आये हैं। उन्होंने कभी यह सोचा ही नहीं होगा कि उनके बच्चे उनके साथ उपेक्षित व्यवहार करेंगे। सारी उम्र वे अपनी इच्छाओं को मारते रहते हैं। यह सोचकर वे अपनी इच्छाओं पर खर्च नहीं करते कि उनके बच्चो के लिए काम आयेंगे। परंतु वही बच्चे उन्हें बुढ़ापे में बोझ मानकर या तो उन्हें वृद्धाश्रम भेज देते हैं या फिर घर में ही उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए बाध्य कर देते हैं।

इसलिए परिवार में अब इनकी न तो पहले जैसी प्रतिष्ठा है, न परिवार इनकी देखभाल कर पा रहा है, और न ही राज्य इनके प्रति अपने दायित्व का निर्वाह कर पा रहा है। इसलिए ये पीढ़ी सामाजिक–आर्थिक असुरक्षा और भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक असुरक्षा का शिकार हो रही है। यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक और निजी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में परिवार की भूमिका अब कम महत्वपूर्ण हो गई है। इसके लिए दोष किसे दिया जाये, यह एक चिंतन का विषय हो सकता है? इन परिवर्तनों ने समाज में असुरक्षा, अस्थिरता, तनाव को बढ़ावा दिया है जो अब परिवारों में भी प्रवेश कर चुके हैं। रिपोर्ट के अनुसार 47 फीसदी बुजुर्ग अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के लिए परिवार पर निर्भर हैं, 34 फीसदी पेंशन पर निर्भर हैं और 21 फीसदी बुजुर्ग अभी भी खुद काम कर रहे हैं और कमा रहे हैं। 57 फीसदी अपने खर्चे अपनी बचत या आय से अधिक होने के कारण आर्थिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं। 45 फीसदी ने पेंशन की अपर्याप्तता और 38 फीसदी ने रोजगार की कमी की सूचना दी। इसके अतिरिक्त 67 फीसदी बुजुर्गों के पास कोई स्वास्थ्य बीमा भी नहीं है। इन अनेक कारणों से समाज के वरिष्ठ नागरिक घुट–घुट कर जीवन (थ्वतबमक बवउचतमेमक सपमि) जीने को बाध्य हुए हैं। ऐसे अलगावित व्यक्ति आज के उपभोक्तावादी दौर का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम हैं और आश्चर्य की बात यह है कि वे स्वयं के अलगाव को समाप्त करने का कोई प्रयास भी नहीं करना चाहते। इसलिए परिवार में भय और हिंसा के पक्ष उभरे हैं। मनुष्य एवं मनुष्य के मध्य संबंधों में अनास्था या अविश्वास उभरा है, वह अलगाव का शिकार हैं, क्योंकि अमानवीय परिवेश इतना सघन हुआ है कि वह किसी से भी अपनी इच्छाओं को साझा (ैंतम) नहीं कर सकते। देखा जाए तो एक तरफ तो समाज में स्वतंत्रता बढ़ी है परतु पहले की तुलना में व्यक्ति आज अधिक जकड़न में है क्योंकि उसके पास

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

स्वाभाविक और स्वतंत्र जीवन जीने का समय ही नहीं बचा है। चूँकि अविश्वास, अधीनस्थता, धोखा, स्वार्थपरकता, भावनाओं का व्यवसायीकरण (बवउमतबपंसप्रंजपवद व मिउवजपवदे), प्रसिद्धि के द्वारा स्वयं को स्थापित करने की कोशिश जैसे पक्ष अब जीवन में शामिल हो चुके हैं। वस्तुतः वह इतना एकाकी है कि किसी पर भी भरोसा नहीं करता, उसकी आंतरिक शक्ति समाप्त हो चुकी है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड्स ब्यूरो (छब्त्ठ) की हालिया रिपोर्ट के अनुसार देश में वरिष्ठ नागरिकों के खिलाफ अपराध में 4.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साल 2016 में देशभर में वरिष्ठ नागरिकों के खिलाफ कुल 21,410 मामलों को दर्ज किया गया। वरिष्ठ नागरिकों के खिलाफ अपराध के मामले में सबसे आगे महाराष्ट्र है, जहां ऐसे कुल 4,694 मामले सामने आए। उसके बाद मध्य प्रदेश (3,877), तमिलनाडु (2,895) और आंध्र प्रदेश (2,243) का स्थान आता है। वहीं साल 2015 में महाराष्ट्र में 4,561, मध्य प्रदेश में 3,456, तमिलनाडु में 2,895 तो आंध्र प्रदेश में 2,495 ऐसे मामले दर्ज हुए थे। भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की जनसंख्या 10.4 करोड़ थी (अर्थात् 5.1 करोड़ पुरुष और 5.3 करोड़ महिलाएं)। अनुमानतः भारत में 12.5 से 15.0 करोड़ बुजुर्ग नागरिक होने की संभावना है। इनकी देखभाल के लिए सरकार और स्वंयसेवी संगठनों की तरफ से तमाम योजनाएं चलाई जाती हैं, जिसकी उन्हें जानकारी भी नहीं होती। हाल के एक अध्ययन में उभर कर आया कि देश में 65 वर्ष की आयु से ज्यादा के 29 फीसदी लोग अकेले रहते हैं। क्योंकि इनके बच्चे या तो विदेश में रहते हैं या नौकरी की वजह से दूसरे शहरों में रह रहे हैं। इनमें से बहुत से बुजुर्ग ऐसे भी हैं, जिनके आगे–पीछे कोई नहीं है। ऐसे में ये बुजुर्ग घर में अकेले रहने के दौरान या अकेले बाहर निकलते वक्त अपराधियों के लिए सॉफ्ट टारगेट होते हैं। बुजुर्गों के साथ तेजी से बढ़ रही अपराध की घटनाएँ इसी ओर संकेत करती नजर आती हैं।

गुजरात के राजकोट में एक प्रोफेसर बेटे द्वारा अपनी माँ की बीमारी से तंग आकर उन्हें छत से धक्का देकर हत्या करने का मामला, छतरपुर (म.प्र.) में 75 साल की वृद्ध महिला के साथ ज्यादती कर हत्या करने का मामला, दिल्ली के ग्रेटर कैलाश इलाके में एक नौकर ने 82 साल की बुजुर्ग महिला की बलात्कार के बाद हत्या कर दी, कोटा (राजस्थान) में रेलवे कॉलोनी में रहने वाले वृद्ध दंपति की उनके नौकर द्वारा हत्या इत्यादि ऐसे पक्ष हैं जो परिवार में उत्पन्न संकट या परिवारों की समाप्ति की तरफ इशारा करते हैं। परंपरागत परिवारों में वरिष्ठ सदस्यों के द्वारा सदस्य को भावनात्मक समर्थन मिलता था जब वह अपने पेशे या नौकरी में निराशा और तनाव का सामना करता था तो वे उसे समाप्त करने में सेफ्टी वाल्व की तरह काम करता था। या कहें कि परिवार के वरिष्ठ सदस्य नई या युवा पीढ़ी के लिए एक काउंसलरध्परामर्शदाता की भूमिका निभाते थे। लेकिन तेजी से बदलते परिवेश ने उनकी इस भूमिका को हाशिए पर खड़ा कर दिया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

अतः परिवार के इस चरित्र को बदलने की आवश्यकता है। देखा जाए तो अर्थव्यवस्था का परिवार से घनिष्ठ संबंध होता है जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था व्यक्तिवादी होती जा रही है वैसे–वैसे परिवार में भी व्यक्तिवादिता का मूल्य बढ़ता जा रहा है। अर्थात् कृषि युग में संयुक्त परिवार (रवपदज ंिउपसल) थे, औद्योगिक युग में एकाकी परिवार (छनबसमंत ंिउपसल), सेवा क्षेत्र के युग में एकल अभिभावक परिवार ेपदहसम चंतमदजीववक ंिउपसल) एवं डिंक परिवार (क्प्छज्ञ. थ्ंउपसल–कवनइसम पदबवउम दव ापके) तथा उत्तर–औद्योगिक अर्थव्यवस्था में एकल व्यक्ति परिवार ेपदहसम चमतेवद ंिउपसल) अस्तित्व में आए हैं। परिणामस्वरुप समाज में सामूहिकता की समाप्ति या परिवार की समाप्ति की घोषणा की जा सकती है। और जब परिवार संस्था ही समाप्ति के कगार पर खड़ी हो तो समाज या सामाजिक संगठन के विघटन को कैसे रोका जा सकता है? परिवार प्रणाली में होने वाले इस विघटन को रोकने के लिए आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मूल्यों को परिवार में शामिल किया जाए, लैंगिक समानता को स्थापित किया जाए, लड़का–लड़की को समान शिक्षा और मूल्य दिए जाए, परिवार में संबंधों में संस्तरण (उच्चता–निम्नता) को समाप्त करना होगा, प्रत्येक सदस्य को एक–दूसरे का सम्मान करना सीखना होगा, टेक्नोलॉजी या सोशल मीडिया पर निर्भरता को कम करके परिवार के सदस्यों को महत्त्व देना, भौतिक वस्तुओं की तुलना में मानवीय संबंधों को अधिक महत्त्व देना होगा। क्योंकि अगर परिवार मजबूत होता है तो समाज मजबूत होता है और समाज मजबूत होता है तो राज्य भी मजबूत होता है। और राज्य मजबूत होता है तो अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति सभी व्यवस्थाएं मजबूत होती चली जाती हैं। यानी किसी भी राष्ट्र का मजबूत और कामयाब होना उसकी परिवार प्रणाली की मजबूती पर निर्भर करता है और परिवार की मजबूती वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका पर आश्रित होती है। इसलिए इस विषय पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है अन्यथा विलाप करने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं बचेगा। हर विशिष्ट दिवस की तरह 1 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस भी चलन में आ गया है। इस दिन कई बड़े–बड़े मंचों पर भाषण, व्याख्यान, या फिर कुछ वृद्ध सदस्यों का सम्मान समारोह आयोजित करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते है। नव युवा पीढ़ी को लगता है कि गूगल पर सारा ज्ञान मिल ही जाता है फिर किसी और से कुछ पूछने या सीखने की क्या जरुरत है। लेकिन यह भी सच है कि हर समस्या का समाधान गूगल पर नहीं मिलता लेकिन बड़ों के अनुभवो से हर समस्या का हल संभव है। किसी ने सही ही लिखा है 'दुनिया का सबसे फायदेमंद सौदा बुजुर्गों के पास बैठना है। चंद लम्हों के बदले में वो आपको बरसों का तजुर्बा दे देते हैं'।

निष्कर्ष :

यह कह सकते हैं कि पीढ़ी अन्तराल (हमदमतंजपवद हंच) को हर किसी के द्वारा समान रूप से अनुभव नहीं किया जाता है। चूँकि विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों से व्यक्ति अपनी मान्यताओं और दृष्टिकोणों को आकार देते हैं। दो पीढ़ियों के बीच पीढ़ी का अंतर तब और भी बढ़ जाता है जब दो अलग–अलग

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

समय अवधि के विरोधाभासी सामाजिक मूल्य आपस में टकराते हैं। समाज में होने वाला तकनीकी विकास भी संस्कृति और मूल्य प्रणाली में अंतर को उत्पन्न करता है। स्मार्टफोन और 4जी नेटवर्क जैसे आविष्कारों ने अचानक हमारे दैनिक जीवन में गति और दक्षता का स्तर तीव्र कर दिया है और मूल्यों में उसके अनुरूप ही परिवर्तन भी तीव्र हुए हैं। उदाहरण के लिए वैश्विक स्तर पर सभी शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन कक्षाओं की शुरुआत के साथ किताबों, कागज और कलम से सीखने की पद्धति में व्यापक बदलाव आया है। परिणामस्वरूप स्मार्ट फोन, कंप्यूटर और लैपटॉप को संचार की एक मात्र विधि के रूप में स्वीकार करना अनिवार्य–सा हो गया है। डिजिटल कनेक्टिविटी तेजी से व्यक्तिगत संबंधों को खत्म कर रही है जहां लोग एक–दूसरे को व्यक्तिगत रूप से मिलते–जुलते थे वहां अब सोशल मीडिया के माध्यम से टेक्स्ट मैसेज या पिक्चर मैसेज भेज दिए जाते हैं। वृद्ध पीढ़ी सामान्यतः इस डिजिटल युग की तीव्र गति के साथ सामंजस्य नहीं कर पाती और स्वयं को उपेक्षित मानती है।

सन्दर्भ :

ठववाउंदए ।दद ंदक क्मसपं ज्ञपउइतमसए 2011ए ष्थ्ंउपसपमे ंदक म्सकमत ब्ंतम पद जीम ज्ूमदजल.थ्पतेज ब्मदजनतलष्ए जीम थ्नजनतम वि बिपसकतमद 21रू117दृ140ण

ळपससमंतकए बेतपे ंदक च्ंनस भ्पहहेए 2007ए ष्जीम जीपतक ।हम ंदक जीम ठंइल ठववउमतेरू ज्ूव ।चचतवंबीमे जव जीमष्वबपंस ष्जतनबजनतपदह वि स्ंजमत स्पमिष् प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि ।हमपदह ंदक स्ंजमत स्पमि 2;2द्धरू13दृ30ण

भ्मसच ।हम प्दकपं त्मचवतज 2022 दृ ष्ठतपकहम जीम ळंच दृ न्दकमतेजंदकपदह म्सकमत छममकेष् च्ंसपजए ज्ञीपदपए 2020ए ळमदमतंजपवद ळंचरू भ्वू टंसनमे ।तमष्ैींचमक ूपजी जीम च्ंेंहम वि ज्पउमए ीजजचेरूध्ध्ंकंउेंनदपअमतेपजलण्बण्पद